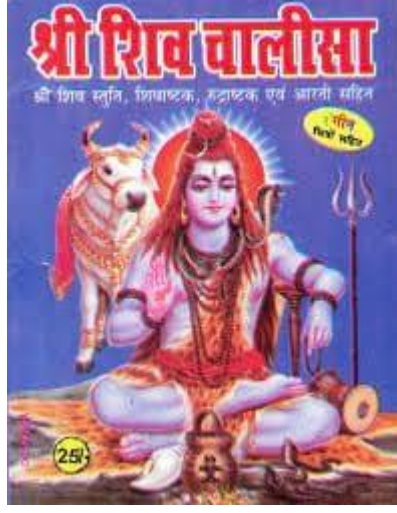


## शिव चालीसा (Shiv Chalisa) ॥ दोहा ॥



जय गणेश गिरिजा सुवन,  
मंगल मूल सुजान ।  
कहत अयोध्यादास तुम,  
देहु अभय वरदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला ।  
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।  
कानन कुण्डल नागफनी के ॥

अंग गौर शिर गंग बहाये ।  
मुण्डमाल तन क्षार लगाए ॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ।  
छवि को देखि नाग मन मोहे ॥ 4

मैना मातु की हवे दुलारी ।  
बाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।

करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे ।  
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ ।  
या छवि को कहि जात न काऊ ॥ 8

देवन जबहीं जाय पुकारा ।  
तब ही दुख प्रभु आप निवारा ॥

किया उपद्रव तारक भारी ।  
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥

तुरत षडानन आप पठायउ ।  
लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥

आप जलंधर असुर संहारा ।  
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥ 12

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।  
सबहिं कृपा कर लीन बचाई ॥

किया तपहिं भागीरथ भारी ।  
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥

दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ।  
सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥

वेद नाम महिमा तव गाई ।  
अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥ 16

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला ।  
जरत सुरासुर भए विहाला ॥

कीन्ही दया तहं करी सहाई ।  
नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।  
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥

सहस कमल में हो रहे धारी ।  
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥ 20

एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।  
कमल नयन पूजन चहं सोई ॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।  
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।  
करत कृपा सब के घटवासी ॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।  
भ्रमत रहों मोहि चैन न आवै ॥ 24

त्राहि त्राहि में नाथ पुकारो ।  
येहि अवसर मोहि आन उबारो ॥

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।  
संकट से मोहि आन उबारो ॥

मात-पिता भ्राता सब होई ।  
संकट में पूछत नहिं कोई ॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।  
आय हरहु मम संकट भारी ॥ 28

धन निर्धन को देत सदा हीं ।  
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥

अस्तुति केहि विधि करें तुम्हारी ।  
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥

शंकर हो संकट के नाशन ।  
मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावें ।  
शारद नारद शीश नवावें ॥ 32

नमो नमो जय नमः शिवाय ।  
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥

जो यह पाठ करे मन लाई ।  
ता पर होत है शम्भु सहाई ॥

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी ।  
पाठ करे सो पावन हारी ॥

पुत्र हीन कर इच्छा जोई ।  
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥ 36

पण्डित त्रयोदशी को लावे ।  
ध्यान पूर्वक होम करावे ॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ।  
ताके तन नहीं रहै कलेशा ॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।  
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥

जन्म जन्म के पाप नसावे ।  
अन्त धाम शिवपुर में पावे ॥ 40

कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी ।  
जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥

॥ दोहा ॥  
नित नेम कर प्रातः ही,  
पाठ करौं चालीसा ।  
तुम मेरी मनोकामना,

पूर्ण करो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,  
संवत चौसठ जान ।  
अस्तुति चालीसा शिवहि,  
पूर्ण कीन कल्याण ॥